आज का पुरुषार्थ 11 July 2022

Source: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *" हम ब्राह्मण है, सच्चे वैष्णव है, पावन दुनिया स्वर्ग के हम मालिक बनने जा रहे है .. तो अब हमें पवित्रता को बढ़ाना है"*

Purity हमारे **भारत देश** की culture रही है। यही हमारी देश की महानता और विशेषता है। और हम सभी ब्राह्मण आत्माओं की इस **श्रेष्ठ जीवन** का आधार है।

प्युरीटी से ही हमारी **पार्सोनालीटि** श्रेष्ठ बनती है। प्युरीटी से ही एक अलौकिक आकर्षण आत्मा में आता है। **यह प्युरीटी है जो विश्व का कल्याण करने वाली है।**

कुछ महान आत्माओं की प्युरीटी ही इस संसार को बदल देती है। प्रकृति को बदल देती है। Pure Energy न जाने क्या क्या परिवर्तन करती है संसार में। हम उसे समझ भी नहीं पाते है।

प्युरीटी सबसे बड़ी महानता है। इसलिए हम सभी को विशेष ध्यान देना है कि हम सभी **प्युरीटी में perfect होते चले।** नेचुरल होते चले।

हमारे संस्कार भी नेचुरली पवित्र होते चले। कर्मेन्द्रियाँ भी शीतल होती चले। अंग अंग शीतल और सुगन्धित होते चले। यह वॉडी कन्शॉसनेस, देह का आकर्षण छूटता चले।

लेकिन यह ध्यान रखना है, कि यह सबकुछ एक दिन में नहीं होगा। यह एक लम्बी यात्रा है। क्योंकि हमने सीढ़ी हजारों सालों में उतरी है। और अब एक दो साल में इम्पुयोर संस्कार भी सभी में प्रबल होंगे।

इसलिए धैर्य रखें, अपने को निरंतर प्रयास में लगाये रखें। हमें अनुभव होना चाहिए कि हम निरंतर आगे बढ़ रहे है। **पास्ट की बातों को भूलते चले।** पास्ट, किसी किसी का बहुत ही खराब बीता है। वह सीन सामने आते है। संकल्प चलते है।

यह बहुत बड़ा सबजेक्ट है के हम पास्ट को पूरी तरह भूल जाये। और जो **व्यर्थ संकल्प** उस पास्ट के कारण चलते है उनसे अब धीरे-धीरे **मुक्त** होते चले।

संकल्प करे ...

वह पास्ट हो गया .. वह हमारा शूद्र जीवन था .. पुराना जीवन था .. अब हम बाबा के पास आ गये .. हमें इस सुन्दर जीवन को enjoy करना है "

अब हमारा pure life है। उस जीवन से जैसे कि हमारा मृत्यु हो चुकी है। **हमारा यह बिल्कुल नया जीवन है।** तो नये जीवन में नया विचार, नया संस्कार, नई दृष्टि वृत्ति, नये तरह के बोल और महान संकल्प हमारे मन में उठने ही चाहिए।

तो आईये हम प्युरीटी की पार्सनलिटी से अपने को सुसज्जित करें। ताकि हमारे कार्य भी सहज सफल होते रहे और अनेक आत्मायें जो देवकुल की है वह हमारी प्युरीटी की ओर आकर्षित होकर बाबा से जुड़ती चले।

क्योंकि प्युयोर संस्कार उनके अंदर भी बहुत ज्यादा है। छुपे हुए है, दवे हुए है। हमारी प्युरीटी उनको आकर्षित करेगी। **सेवा बृद्धि का भी यह बहुत अच्छा साधन है।**

जहाँ निमित्त आत्मायें जितनी पवित्र है वहाँ उतनी सेवा की बृद्धि है। **सेवा में रौनक है, सेवा निर्विघ्न है।**

क्योंकि अपवित्रता ही कही न कही सेवाओं में विघ्न डालती है। व्यक्तिगत जीवन में भी विघ्नों का कारण कहीं न कहीं स्थूल या सूक्ष्म अपवित्रता ही होती है।

इसलिए बाबा की श्रेष्ठ आज्ञा को शिरोधार्य करते हुए हमें अपनी जीवन को सम्पूर्ण पवित्रता की राह पर अग्रसर रखना है।

संशय की बातें भी बहुत आते है। माया भी बहुत प्रवल है। अनेकों को हराती है क्योंकि विकारों ने मनुष्यों के मन में, वृत्तियों में जन्म जन्म की समाये रहते है। और बाहर से भी उसी तरह की हवा मिलती है।

लेकिन .... " **मैं तो परम पवित्र हूँ** ".. अब वह मेरा मार्ग नहीं है .. वह मार्ग मैंने छोड़ दिये है .. मैं पवित्रता का फ़रिश्ता हूँ .. मुझे तो अब सबको पवित्र वायब्रेशन्स देने है .. मुझे तो प्रकृति की सेवा करनी है।

ऐसे सुन्दर संकल्पों से स्वयं को प्रतिदिन चार्ज किया करे। अपने से बातें करने से वह व्यर्थ की सब बातें समाप्त हो जायेंगी।

तो आज सारा दिन इसी स्वमान में रहकर हम फ़ील करेंगे कि ...

" बाबा से पवित्र एनर्जी हम पर पड़ रही है .. हमें मिल रही है "

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org